ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 209-213

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

बुन्देली लोकगीतों में विविध परिप्रेक्ष्य

डॉ0 नीरज गुप्ता

सहा. प्राध्यापक–हिंदी विभाग, गोस्वामी तुलसीदास राजकीय महाविद्यालय, कर्वी– चित्रकूट (उ0प्र0) भारत

Received-06.06.2023, Revised-12.06.2023, Accepted-17.06.2023 E-mail: neerajgupta.anand@gmail.com

सारांशः ***'बुन्देली लोकगीत मौखिक परम्परा की देन हैं। बुन्देली लोकगीतों में बुन्देली संस्कृति के विविध परिप्रेक्ष्य को देखा जा सकता है जिसमें सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य आदि प्रमुख हैं। समाज में सामाजिक संस्कारपरक लोकगीत अत्यन्त उपयोगी हैं, उन्हें नजर अन्दाज करना किसी सामाजिक सहृदय के लिये सहज नहीं है। बुन्दलेखण्ड के लोकगीतों में धार्मिक भावना की भी अभिव्यक्ति मिलती है, जब भी कोई शुभ मांगलिक कार्य सम्पन्न होता है, तो उसे लोकगीतों के द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। प्राचीन काल से ही बुन्देलखण्ड में राजनीति के जो रूप विकसित हुए उनका वर्णन भी लोकगीतों में किया गया है। साथ ही बुन्देलखण्ड की आर्थिक परिस्थितियों से सम्बन्धित लोकगीत भी जन–समूह द्वारा गाये जाते हैं। इसी प्रकार बुन्देली लोकगीतों में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य भी देखने को मिलता है।***

कुंजीभूत शब्द– बुन्देली लोकगीत, बुन्देली संस्कृति, लोकमानस, लोक परिवेश, लोकगीतों में विविध परिप्रेक्ष्य, मांगलिक कार्य।

बुन्देली लोकगीत मौखिक परम्परा की देन हैं, जिनके वास्तविक रचनाकाल का निर्धारण कठिन है। दूसरी ओर इनके वास्तविक रचनाकारों का भी आसानी से पता नहीं चलता क्योंकि बुन्देलखण्ड जनपद जितना विशाल है, उतना ही समृद्ध यहाँ के लोकगीतों का भंडार है। इसी प्रकार यहाँ के लोक की विविधता के कारण लोकगीतों में भी विविधता के रंगों की झलक देखने को मिलती है। बुन्देली लोकगीतों में बुन्देली संस्कृति के विविध परिप्रेक्ष्य को निम्नवत् देखा जा सकता है :–

1. बुन्देली लोकगीतों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य
2. बुन्देली लोकगीतों का धार्मिक परिप्रेक्ष्य
3. बुन्देली लोकगीतों का राजनैतिक परिप्रेक्ष्य
4. बुन्देली लोकगीतों का आर्थिक परिप्रेक्ष्य
5. बुन्देली लोकगीतों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

बुन्देली लोकगीतों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। लोकगीतों का सम्बन्ध लोक से होता है। समाज में सामाजिक संस्कारपरक लोकगीत अत्यन्त उपयोगी हैं। महत्वपूर्ण रूप से उस वक्त जब विदेशी तथा अपसंस्कृति के उग्र आक्रमण सामाजिक ताने–बाने को तोड़ने में लगे हुए हैं और आधुनिकता के प्रभाव में परिवारों का जो विश्रृंखलन हो रहा है। सामाजिक एकता की जितनी अवहेलना हुयी है, उन्हें नजर अन्दाज करना किसी सामाजिक सहृदय के लिये सहज नहीं है। इस कारण इस प्रकार की परिस्थितियों में सामाजिक चेतना तथा उनसे सम्बन्धित लोकगीत संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग बन जाते हैं क्योंकि लोक की संस्कृति लोकगीतों की जड़ है।

निश्चित तौर पर सामाजिक एवं संस्कारपरक लोकगीत समाज की जागृति के लिए अनिवार्य हैं। बुन्देलखण्ड में ऐसे लोकगीतों में जन्म के समय गाये जाने वाले सोहर लोकगीत, बधाई गीत तथा चौक में मधुरला गीत एवं कुँआ पूजन के गीत, मुण्डन गीत तथा विवाह पर बनरा–बनरी गीत, हल्दी गीत, तेल गीत, चढ़ावे के गीत आदि प्रमुख हैं। बुन्देली लोकगीतों में सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित लोकगीत भी गाये जाते हैं, जिसका उदाहरण दृष्टव्य है :–

"मोर चरखे का टूटै न तार, चरखा चालू रहे।
गांधी महात्मा दूल्हा बने है, दुलहिन बनी सरकार।
मोर चरखे ...
सारे वालेण्टियर बने बराती, नउआ बनो थानेदार।
सब पटवारी गावैं गारी, पूड़ी बेले तैसीलदार।
मोरे चरखे ...।"[1]

लोकगीतों के माध्यम से परिवार के सामाजिक पहलु के यथार्थ रूप का चित्रण प्राप्त देखा जा सकता है। पारिवारिक संस्कारों से सम्बन्धित लोकगीतों को डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने कहा है– "लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र है।"[2] पहले जब परिवार के सभी सदस्य संयुक्त रूप से एक साथ रहते थे, तब वहाँ बड़े बुजुर्गों का अनुशासन होता था, परन्तु विघटन के इस दौर में एकल परिवार बन गये और संयुक्त परिवारों का अस्तित्व समाप्त हो गया। संयुक्त परिवार से जुड़े लोकगीतों में बहुओं द्वारा आपसी हास–परिहास में सास से चक्की पिसवाने एवं बड़ी जेठानी से दही भमवाने वाले गीत देखे जा सकते हैं और यदि सास एवं जेठानी उसकी बातों को अनदेखा करती है, तो वे मायके जाने, बँटवारे करवाने आदि की बात करती हैं, जो अधिकांशतः लोकगीतों का विषय बन जाता है। वहीं जब किसी स्त्री का पति सौतन ले आता है, तब उस स्त्री की कैसी स्थिति होती है, उसका वर्णन लोकगीत द्वारा किया करती हैं :–

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

मोर सइयाँ सौतनियाँ रखन लागे
मोर दिन–दिन मान घटन लागे
सइयाँ तो गेहै बजरवा दुकनिया
लहंगा चुनरी बेसहन लागे
मोर सइयाँ ...।[3]

समाज में प्रचलित विभिन्न पर्वो एवं त्यौहारों पर लोकगीत गाये जाते हैं। जैसे– होली के त्यौहार पर फाग, दीपावली पर सुराती, इसी प्रकार नवरात्रि पर, दशहरा, रक्षाबन्धन अन्य त्यौहारों पर भी बुन्देलखण्ड में लोकगीत गाये जाते हैं, जो कि लोकजीवन के सामाजिक परिवेश में सरसता, प्रसन्नता और उल्लास उत्पन्न करते हैं। इन बुन्देली लोकगीतों के द्वारा लोग पारस्परिक सामाजिक मेल–जोल को प्रगाढ़ करते हैं।[4] बुन्देलखण्ड के सामाजिक परिवेश में लोक द्वारा जिनका सबसे ज्यादा गुणगान प्राप्त होता है, उनमें मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का नाम अग्रगण्य है। वैष्णव भक्ति परम्परा में भगवान श्री राम के जीवन से सम्बन्धित जो तत्व हैं उनका लोकमानस की भावनाओं से प्रगाढ़ सम्बन्ध है तथा जनमानस पर श्री राम के चरित्र का गहरा प्रभाव है। श्री राम का चरित्र भारतीय समाज को शक्ति सामर्थ्ययुक्त बनाता है। श्री राम के चरित्र को लोकमानस में प्रतिष्ठित करने का श्रेय महाकवि तुलसीदास जी को है। राम का जीवन लोक को अपना सा जीवन लगता है। पिता अपनी पुत्रियों के लिए राम जैसे वर की आकांक्षा रखते हैं तथा वर पक्ष के पिता अपने पुत्र के लिए सीता जैसी कुलवधू चाहते हैं। लक्ष्मण और भरत जैसा भाई एवं कौशिल्या तथा राजा दषरथ की तरह माता–पिता हों, सब ऐसी कामना रखते हैं। जिसे लोकगीत द्वारा प्रस्तुत किया गया है :–

कौशिल्या जू मांगै अजुधिया कै राम।
सरजू कइ दरशन हो रामा।।[5]

इस तरह के लोकगीत ही किसी आदर्श समाज की धरोहर हैं। जैसे पति–पत्नी का आदर्ष स्नेह या प्रेम लोकगीतों का जीवन है। जब किसी का पति अपनी पत्नी से दूर परदेश जाता है और पत्नी को अकेले ही घर पर रहना पड़ता है, तब पतिव्रता स्त्री अपने पति के विरह में व्याकुल होकर कितना कठिन जीवन व्यतीत करती है, उसका वर्णन लोकगीत के माध्यम से दृष्टव्य है–

जब से तुम गये मोरे पियवा
सेजरिया नाहिं डारयो
अपने ससुर ताप्यो रसोइयाँ
भुंइया परी लोटयो।[6]

वर्तमान भारतीय समाज में स्वास्थ्य की चिन्ता भी गंभीर सामाजिक समस्या बनी हुयी है। आज व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो रहा है। यदि सोच–विचार कर अपने खाद्य पदार्थो या सामग्री का सेवन करें, तो स्वस्थ्य रह सकता है जिसका वर्णन निम्न पंक्तियों द्वारा किया गया है :–

भाजी रोज हरी री खइयो, यारो भूल न जाइयो।
साग हरीरौ रकत बनावै, नित खेतन में बइयो।।[7]

बुन्देली लोकगीतों का धार्मिक परिप्रेक्ष्य– बुन्देलखण्ड धर्म एवं आस्था प्रधान है। यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं जो विभिन्न प्रकार से अपने–अपने धर्मों के रीति–रिवाजों, मान्यताओं एवं विश्वासों पर श्रद्धा रखते हैं और उन पर विश्वास करते हैं। हमारे जनमानस के अस्तित्व का सम्बन्ध इसके साथ जुड़ा हुआ है। ऐसी धारणा है कि जब तक धर्म का अस्तित्व है तब तक मानव की मनुष्यता सुरक्षित रहेगी क्योंकि धर्म के द्वारा व्यक्ति में दया, क्षमा आदि की भावना विद्यमान रहती है। यदि मनुष्य के अन्दर धार्मिकता का पतन होता है तो मनुष्यता का भी पतन होता है। बुन्दलेखण्ड के लोकगीतों में धार्मिक भावना की भी अभिव्यक्ति मिलती है। जब भी कोई शुभ मांगलिक कार्य सम्पन्न होता है, तो उसे लोकगीतों के द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। ये लोकगीत भजन, कीर्तन आदि के रूप में गाये जाते हैं, जिसका उदाहरण दृष्टव्य है :–

सिर पर मटकिया दहि का नजराना,
छोड़ो श्याम बहियाँ हमे तो घर जाना।
एक तो डर मोहे बारे बलम की, बारे बलम की,
सासु ननदियाँ देहे घर ताना।
दधि मोरे खायन मटुकी मोरे फोरेन,
ऊपर से कान्हा हमि को समझाना।
छोड़ो श्याम ...
कहाँ की तुम सुघर ग्वालिनी, सुघर ग्वालिनी,
काहे को जाती रही बरसाना।
छोड़ो श्याम ...
मथुरा की मैं सुघर ग्वालिनी, सुघर ग्वालिनी
राधा से मिलन जाती बरसाना।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

छोड़ो श्याम ...।[8]

बुन्देलखण्ड में धार्मिक भावना के अन्तर्गत देवी देवताओं की पूजा–पाठ, वन्दना और उपासना आदि सम्मिलित है। जब भी किसी मांगलिक कार्य की शुरूआत करते हैं, तब बुन्दलेखण्ड मे भगवान गणेश की वन्दना की जाती है। श्री गणेश के प्रति धार्मिक आस्था होने के कारण उन्हें संसार के जो कष्ट–क्लेष हैं उनका नाश करने वाला माना जाता है तथा ऐसी मान्यता है कि वे ऋद्धि–सिद्धी प्रदान करने वाले हैं। बुन्देलखण्ड में माँ दुर्गा एवं ज्ञान की देवी माँ शारदा विशेष रूप से पूजनीय है, जिनसे जुड़ें विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाये जाते हैं तथा जिनकी महिमा वर्णन के क्रम में सृष्टि की रचना और उसकी रक्षा करने वाली देवी के रूप में माँ दुर्गा का गुणगान लोकमानस द्वारा लोकगीतों के रूप में किया जाता है। कार्तिक मास में महिलायें स्नान करने के उपरान्त भगवान की पूजा कर लोकगीत गाती हैं। यह एक धार्मिक त्यौहार है जिसमें एक समूह के रूप में गीत गायन किया जाता है, जिसका उदाहरण दृष्टव्य है :–

जय–जय तुलसी जय श्री राम
जय–जय लक्ष्मण जय श्री हनुमान
कहाँ रहे तुलसी कहाँ रहे राम
कहाँ रहे लक्ष्मण कहाँ रहे हनुमान
जय–जय ...।[9]

बुन्देली लोकगीतों का राजनैतिक परिप्रेक्ष्य– आज प्रत्येक क्षेत्र में राजनैतिक गतिविधियों का साम्राज्य फैला हुआ है। निश्चित रूप से राजनीति आम जनमानस को प्रभावित करती है एवं साहित्य में भी राजनीतिक गतिविधियों का हस्तक्षेप देखने को मिलता है। ये राजनीतिक गतिविधियाँ गाँव के लोगों पर भी हावी रहती हैं। जिसे उनके कंठ द्वारा लोकगीतों के रूप में सुना जा सकता है। प्राचीन काल से ही बुन्देलखण्ड में राजनीति के जो रूप विकसित हुए उनका वर्णन लोकगीतों में आल्हा–ऊदल एवं राजा परमाल आदि के वर्णन/प्रसंगों जैसे लोकगीतों के द्वारा किया गया है, जिसे लोकमानस द्वारा उत्साहपूर्वक गाया जाता रहा है और जो वीरों में उत्साह भरने तथा संचार करने का कार्य करते हैं। बुन्देली लोकगीतों द्वारा एक ओर गाँधी जी के अहिंसक राष्ट्रीयता, स्वदेशी आन्दोलन एवं सत्याग्रह पर और नमक कानूनों पर भी लोकगीत गाये जाते रहे हैं तो दूसरी ओर भ्रष्ट राजनेताओं द्वारा किये जाने वाले कारनामों, उनके षड़यन्त्रों, रिश्वत, शोषण आदि को भी लोकगीतों के द्वारा व्यक्त किया गया है :–

मंत्री और विधायक सबसे, घपन धैरूआ कर रये।
सबरी सी0सी0 सड़कें चाटी, तोऊ पेट न भर रये।
काम न कर रये एकलार जो, भए घूस के आदी।[10]

बुन्देली लोगीतों का आर्थिक परिप्रेक्ष्य– बुन्देलखण्ड की आर्थिक परिस्थितियों से सम्बन्धित लोकगीत भी जन–समूह द्वारा गाये जाते हैं क्योंकि बुन्देलखण्ड आज भी कृषि प्रधान क्षेत्र है, जिसमें कृषक जीवन के विविध पहलुओं से सम्बन्धित लोकगीत गाये जाते हैं। जब वर्षा न होने पर सूखा पड़ता है और मकिसान जमींदार/साहूकार/बैंकों से लिये गये कर्ज को चुकता नहीं कर पाता और ऋणग्रस्त हो जाता है, तब ऐसी परिस्थितियाँ लोकगीत का रूप धारण कर लेती हैं। ग्रामीण जीवन में अधिकतर स्थानों पर आज भी घोर गरीबी, दीन–दरिद्रता, निर्धनता एवं कंगाली आदि विद्यमान है तथा गाँव में ऐसे लोग भी हैं जिनकी आर्थिक परिस्थिति इतनी जर्जर है कि उनके पास न तो रहने के लिए पक्के घर और तन ढकने के लिए ढंग के वस्त्र तक होते हैं, ऊपर से मंहगाई का बोलबाला होने के कारण लोग गरीबी एवं भुखमरी का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं अथवा मजदूरी और पलायन की ओर अग्रसर होने लगते हैं, जो लोककंठ से लोकगीतों के रूप में मुखरित होता है :–

जनता इतनी जादा बढ़ गई, तासे तनक मुसीबत पड़ गई।
सबकी हालत सोऊ विगरगई, हरि का भूले।
लखपति सेठ व्यापारी, करते जो काला बाजारी।
तासे वस्तु मंहगी भारी, धन में फूले।।[11]

आर्थिक जीवन से जुड़ी हुयी विषम परिस्थितियों के बीच भी गाँव के लोगों की रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े हुए परिवेश का चित्रण लोकगीतों के माध्यम से बुन्देली कवि रामचरण हयारण मित्र ने किया है :–

कसकै जूरौ मार कछोटा, टइया दैके हैरो।
मठो भमत के भौजाई की बजन लगनी करधौनी।[12]

लोकगीतों की परिभाषा देते हुए डॉ0 कुंजबिहारी दास ने लिखा है– "लोकसंगीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य प्रवाहों से बाहर कम या अधिक आदिम अवस्था में निवास करते हैं। यह साहित्य प्रायः मौखिक होता है और परम्परागत रूप से चला आ रहा है।"[13] यद्यपि बुन्देलखण्ड की धरती रत्नों से भरी पड़ी है, परन्तु फिर भी यहाँ का किसान हमेशा परेशानी का सामना करता है। किसान की समस्या तथा उसकी ऋणग्रस्तता का वर्णन बुन्देली लोकगीतों के द्वारा अत्यन्त ही मार्मिकता से प्रस्तुत किया गया है :–

हमाई कैसे चुकत तियाई
मैड़न–मैड़न हम फिर आए डीमा देत दिखाई
छोटी–छोटी बाल कड़ी है, कूरा रओ फर्राई।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

माते–जमींदार कौ आओ बुलउवा कौ करत सहाई,
टलिया छबिया साउकार लइ रैगइ पास लुगाई।
हमाई कैसे चुकत तियाई। [14]

बुन्देलखण्ड में जब किसान कृषि से सम्बन्धित श्रम कार्य करते हैं, तब वे सैरा लोकगीत गाया करते हैं तथा जब वे अपने खेतों में कटाई कार्य करते हैं। उस समय बिलवारी एवं दिनारी गीत गाये जाते हैं। इस प्रकार के गीत स्त्री तथा पुरूष दोनों के द्वारा गाये जाते हैं। बिलवारी गीत उस समय गाया जाता है जब फसल की कटाई होती है। इसी प्रकार चैती गीत कृषि में श्रम के साथ–साथ हास–परिहास को लोकगीतों द्वारा व्यक्त करते हैं :–

रौटा करै न पौनी, देखत की नौनी,
बहुघन देखत की नौनी।
हाँत भरे को घुँगटा घालै, घुँगआ खोलै,
उर मटकाय बिरौनी। [15]

बुन्देली लोकगीतों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– बुन्देली लोकगीतों की परम्परा मौखिक है जिसमें ऐतिहासिक पात्रों आल्हा–ऊदल, हरदौल, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा गाँधी जी आदि पर लोकगीत की रचना देखने को मिलती है। हरदौल गाथा ऐतिहासिक तथा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण गाथा है जिसे लोक द्वारा श्रद्धापूर्वक गाया जाता है, जिसमें हरदौल की विषपान घटना का वर्णन मिलता है। हरदौल से सम्बन्ध रखने वाले गीतों में कथापरक लोकगीतों का प्रमाण मिलता है परन्तु ये खण्डचित्रों के रूप में ही प्राप्त होते हैं जिनमें सर्वाधिक कथाओं में हरदौल के विषपान तथा भात देने का वर्णन मिलता है, जिसको बुन्देलखण्डवासी लोकगीत के रूप में श्रद्धा से स्मरण करते हैं। हरदौल कथा की ऐतिहासिकता का प्रमाण इनसे सम्बन्धित ऐतिहासिक पात्र जैसे– ओरछा नरेश जुझार सिंह आदि हैं। बुन्देलखण्ड के लोग हरदौल को लोक देवता के रूप में पूजते हैं, जिनसे सम्बन्धित लोकगीतों का प्रचलन है:–

कन्या बैठी जोरे हाँत
आ रई दुआरे पै बारात
तुम बिन कौन पूजहै भात
तुम पै लिपटी प्रभु की बेलि
तुमाये बल ब्याव रचो
अइयो अइयो हजारी हरदौल
तुमाये बल व्याव रचो। [16]

वहीं ऐतिहासिक लोकगीतों में भात की परम्परा है। जब मामा अपने भांजी के लिए चीकट लाते हैं। चीकट की प्रथा हरदौल के समय से चली आ रही है। यह मान्यता है कि हरदौल भात देने के लिए अशरीर योनि में गये थे और दायज में असीमित वस्तुऐं दी थीं। वहीं बहन की जिद के कारण उन्हें प्रकट होना पड़ा था, जिसे लोकगीतों में विविध रूप से गाया जाता है। एक लोकगीत द्वारा दृष्टव्य है :–

कुंजा जाए चेटका रोई,
तुम बिन भइया और न कोई,
जो मामा को नेगे तो होई
तुम बिन कौन निभावै भैया,
कारज साध सब जइयो। [17]

बुन्देलखण्ड में रानी लक्ष्मीबाई की शौर्य गाथा लोक के कंठ में विराजमान है जो अक्सर लोकगीतों के रूप में मुखरित हो उठती है। उनकी शौर्य एवं वीरता का वर्णन लोकगीतों के रूप में किया गया है, जोकि दृष्टव्य है :–

खूबई लरी मरदानी, अरे झाँसी वारी रानी।
सिगरे सिपइयन को पेरा–जलेबी, अपन खाई गुड़ धानी। अरे ....
बुरजन–बुरजन तोपै लगै दई, गोला चलाए आसमानी। अरे ...
छोड़ मोर्चा लसकर खौं दौरी, दूड़ै मिलै न पानी। अरे ...
खूबई लरी मरदानी, अरे झाँसी वारी रानी। [18]

बुन्देली लोकगीतों में गाँधी जी के अहिंसा पर आधारित स्वदेशी आन्दोलन एवं खादी तथा सत्याग्रह आन्दोलन से सम्बन्धित विषयों को भी गीत के रूप में गाया जाता रहा है :–

सत्त अहिंसा कौ पढ़ौ मोहन मोहन मंत्र
बिन हथयारन के हो गये आज सुतंत्र।[19]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुन्देली संस्कृति और साहित्य– प्रो0 नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ0सं0–410.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

2. लोकगीत एवं उनका शिल्प सौन्दर्य– डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ0सं0–17.
3. बुन्देली लोकगीत– सुशीला देवी।
4. लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम– डॉ0 शान्ति जैन, पृ0सं0–711.
5. बुन्देली में विवाह गीत का अध्ययन– ज्योति द्विवेदी, पृ0सं0–54.
6. बुन्देली में विवाह गीत का अध्ययन– ज्योति द्विवेदी, पृ0सं0–54.
7. बुन्देली फागों का विवेचनात्मक अध्ययन– पंकज त्रिपाठी, पृ0सं0–51.
8. बुन्देली लोकगीत– सुशीला देवी।
9. बुन्देली लोकगीत– सुशीला देवी।
10. बुन्देली बसन्त– डॉ0 बहादुर सिंह परमार, पृ0सं0– 71.
11. बुन्देली फागों का विवेचानात्मक अध्ययन– पंकज त्रिपाठी, पृ0सं0–50.
12. बुन्देली काव्यधारा– डॉ0 मनुजी श्रीवास्तव एवं डॉ0 सुरेन्द्र सक्सेना, पृ0सं0–36.
13. लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम– डॉ0 शान्ति जैन, पृ0सं0– 711.
14. बुन्देली महिमा–डॉ0 पुनीत बिसारिया एवं डॉ0 संजय सक्सेना, पृ0सं0–100.
15. बुन्देली संस्कृति और साहित्य– प्रो0 नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ0सं0–377.
16. बुन्देलखण्ड का इतिहास– प्रो0 बी0के0 श्रीवास्तव।
17. बुन्देली संस्कृति और साहित्य– प्रो0 नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ0सं0– 291.
18. बुन्देली संस्कृति और साहित्य– प्रो0 नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ0सं0– 288.
19. राष्ट्रीय आल्हा– कवि अवधेश (बुन्देली महिमा)–संपा0 डॉ0 पुनीत बिसारिया एवं डॉ0 संजय सक्सेना, पृ0सं0–68.

*****